International Journal of Home Science 2021; 7(1): 248-254

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2021; 7(1): 248-254
© 2021 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 07-11-2020
Accepted: 27-12-2020

मृदुला भारत
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर, युनिवर्सीटि डीपार्टमेन्ट ऑफ होम सायन्स, विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

प्रतिमा कुमारी
विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
मृदुला भारत
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर, युनिवर्सीटि डीपार्टमेन्ट ऑफ होम सायन्स, विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

आधुनिक युग में युवाओं द्वारा मोबाइल फोन अनुप्रयोग के प्रभाव का अध्ययन

मृदुला भारत एवं प्रतिमा कुमारी

सारांश
नमोफोबिया का अर्थ है–मोबाइल फोन का प्रयोग न कर पाने या बिना मोबाइल फोन के होने का डर। यह शब्द 'नो मोबाइल फोन फोबिया' से बना है। मोबाइल खोने या पास ना होने पर जो चिंता होती है। वह नमो फोबिया कहलाती है। आधुनिक युग में यह फोबिया आम बात है। इससे यह स्पष्ट है कि टेक्नोलॉजी पर निर्भरता बढ़ती जा रही है। जिसमें मोबाइल फोन सबसे आम गैजेट है।

मुख्य शब्दः मोबाइल फोन, तकनीकी, फोबिया।

प्रस्तावना
नमोफोबिया का शाब्दिक अर्थ मोबाइल फोबिया अर्थात मोबाइल फोन के संपर्क से बाहर रहने का डर है। यह शब्द मोबाइल + फोन + फोबिया से बना है। यदि कोई व्यक्ति बिना नेटवर्क के क्षेत्र में है या बैटरी खत्म होने वाली है तो वह चिंतित हो जाते हैं। मोबाइल फोन की बढ़ती माँग और घटती लागत के कारण मोबाइल फोन की निर्भरता दुनिया भर में बढ़ रही है। इसके अंतर्गत मोबाइल का अपेक्षाकृत सस्ता और आसानी से उपलब्ध हो जाना है। एक अध्ययन से पता चला है कि मोबाइल फोन का अधिकतम उपयोग मस्कुलर एस्केलेट जैसी समस्याओं के रूप में उभर कर सामने आई है। इसके अंतर्गत गर्दन में ऐठन, अंगूठे में दर्द, सिरदर्द, कान का दर्द एवं मोबाइल फोन के विकिरण से दृष्टि का धुंधला होने की समस्या सामने उभर कर आई है। यूनाइटेड नेशन इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियन और विश्व बैंक ने वर्ष 2018 को आधार बनाकर एक रिपोर्ट तैयार की है। इस रिपोर्ट के अनुसार अगर 100 मोबाइल यूजर्स के पास 107 कनेक्शन है। यानी आज प्रत्येक व्यक्ति अपने पास एक से ज्यादा मोबाइल रखते हैं। अर्थात धरती पर मनुष्य से ज्यादा संख्या में मोबाइल डिवाइस की संख्या हो गई है। आज भारत हो या दुनिया का कोई और देश मोबाइल फोन इंसान के जीवन का मास्टर की बन गया है। यह एक ऐसी चाभी है जो लोगों के जीवन को नियंत्रित करने लगी है। यानी आज प्रत्येक व्यक्ति अपने पास एक से ज्यादा मोबाइल रखते हैं। अर्थात धरती पर मनुष्य से ज्यादा संख्या में मोबाइल डिवाइस की संख्या हो गई है। इस रिपोर्ट के अनुसार 2018 के अंत तक दुनिया में 51.2% लोग अर्थात 400 करोड़ लोग मोबाइल फोन पर इंटरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं। जब की दुनिया में मोबाइल ब्रॉडबैण्ड कनेक्शन की संख्या 525 करोड़ से ज्यादा है। यानी जितने लोगों के पास फोन है। उससे ज्यादा कनेक्शन है। भारत की बात करें तो यहां 100 करोड़ से ज्यादा लोग मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं। इनमें 50 करोड़ के पास मोबाइल इंटरनेट का कनेक्शन भी है। ये क्रांति गॉवो में तेजी से फैल रही है। भारत में मोबाइल इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले 25 करोड़ लोग गांव में रहते हैं। यानी चाहे भारत हो या दुनिया का कोई और देष मोबाइल फोन इंसान के जीवन का मुख्य कुंजी बन गई है। यह एक ऐसी चाभी है। जो लोगों के जीवन को नियंत्रित करने लगी है। दुनिया में बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है। जिनके लिए मोबाइल फोन किसी नशे से कम नहीं है। आज मोबाइल पर गर्दन झुका कर चलती अंगुलीयाँ हमें तकनीकी का गुलाम बना चुकी है। तकनीक का इस्तेमाल तब तक ठीक है जब तक कि इसकी जरूरत है। लेकिन जब यह जरूरत धीरे.धीरे लत बन जाए तो समझ लीजिए आप एक ऐसी बीमारी का शिकार हो रहे हैं जिससे आपको कुछ देर अपने फोन के बगैर रहने पर बेचैनी

होने लगती है। ये इंसान के अंदर फैसला लेने की क्षमता और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित कर देती है। इसे ही नमो फोबिया या फोबिया के नाम से जाना जाता है। भारत के लोग सबसे ज्यादा सोशल मीडिया के दीवाने हैं। एक अनुमान के मुताबिक वर्ष 2022 तक भारत में मोबाइल इंटरनेट उपभोक्ता की संख्या 55 करोड़ के पार चली जाएगी। दुःख की बात यह है कि इनमें से ज्यादातर लोग मोबाइल फोन से होने वाली मानसिक परेशानियां में उलझ जाएंगे। आज इंसान इसे जानता तो है परंतु मानता नहीं है। इस शोध के अंतर्गत हुए लोगों ने यह माना है कि आज लोग दोस्तों के बीच बैठे हो या अकेले मोबाइल फोन सब का अभिन्न अंग बन चुका है। यह बात सभी ने इमानदारी से मानी है। मोबाइल फोन की अधिकतम इस्तेमाल से मानसिक व्यवहार में बदलाव के अलावा मोबाइल फोन से शरीर पर सीधा नुकसान होता है या नही इसे साबित करने के लिए दुनिया भर में रिसर्च चल रही है। अभी तक जितने सबुत मिल चुके है। पहली बार भारत में मोबाइल फोन का सेहत पर हो रहे असर के नतीजे के शुरुआती संकेत मिलने शुरू हो गए हैं। शोध का दावा है कि मोबाइल फोन से निकलने वाली विकिरण से लोगों में बायोलॉजिकल बदलाव आ रहे हैं। स्मार्टफोन से निकलने वाले रेडिएशन को Specific Absortion Rate (SAR) स्पेषिफीक एब्जॉषन रेट कहते हैं। इंडिया में तैयार (SAR) के मानक के हिसाब से इसे 1.6 वॉट प्रति किलोग्राम से ज्यादा नहीं होना चाहिए। इससे ज्यादा विकिरण होने पर यह आपको नुकसान पहुंचा सकती है।

शोध आपको इस बात से अवगत कराएगी की आपके मोबाइल में टावर नहीं टयुमर के भी सिग्नल है ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंनसेस (AIMS) के एक नए शोध में से बहुत बड़ा खुलासा हुआ है। एम्स के तरफ से जारी की गई एक रिपोर्ट मुताबिक 10 साल से ज्यादा समय तक मोबाइल फोन का इस्तेमाल करने से ब्रेन ट्यूमर का खतरा 33% बढ़ जाता है । किंतु मोबाइल कंपनी द्वारा कराई गई अलग–अलग अध्यनो में हमेशा इस खतरे को कम करके दिखाया गया है। वहीं रिर्सच के मुताबिक दुनिया भर में हुई ज्यादातर सरकारी रिसर्च मे मोबाइल फोन से ब्रेन ट्यूमर की बात कही गई है मोबाइल फोन से इलेक्ट्रो मेग्नेट वेस्ड एनर्जी निकलती है। इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रीचर्स ऑफ कैंसर के मुताबिक ये तरंगे इंसानो में कैंसर का कारण बन सकती है और इससे ब्रेन ट्यूमर भी हो सकता है । यानि मोबाइल फोन उतना ही खतरनाक है जितना डिजिटल वाहनो से निकलने वाला धुआं । लेकिन फर्क सिर्फ इतना है कि इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन वाले प्रदूषण को हम आप बकायदा अपनी जेब से पैसा देकर खरीदते हैं और फिर ये आपको धीरे–धीरे बीमार करता चला जाता है लेकिन कोई भी कंपनी आपको मोबाइल फोन के खतरे के बारे में कभी भी सच्चाई नहीं बताता कोई कंपनी यह नहीं कहती कि उसका प्रोडक्ट उत्पादन आपको कैंसर और ब्रेन ट्यूमर दे सकता है। भारत की 80% आबादी मोबाइल फोन का इस्तेमाल करती है। मोबाइल ऑपरेटर की संस्था ग्लोबल सिस्टम मोबाइल एसोसिएशन के मुताबिक 2017 में पूरी दुनिया में मोबाइल फोन यूजर्स की संख्या का प्रोजेक्शन 500 करोड़ से ज्यादा था। इस संस्था के मुताबिक अगले 3 वर्षों में टेलीकॉम कंपनियों को अकेले भारत में ही 3 करोड़ नए मोबाइल यूजर्स मिल जाएंगे। यानी भारत में 100 करोड से भी ज्यादा लोगों पर मोबाइल फोन रेडिएशन से होने वाले कैंसर का खतरा है। भारत में चाहे किसी के पास मकान हो या ना हो अर्थात आर्थिक समृद्धि हो या ना हो लेकिन उनके पास मोबाइल फोन अवश्य होता है। आज छोटे बच्चे भी इस फोबिया से अछूते नहीं है। बच्चे आज मोबाइल फोन के साथ ही खेलते हैं और अभिभावक भी उन्हें बिना सोचे समझे स्मार्टफोन दे भी देते हैं। यह नहीं सोचते कि मोबाइल की हानिकारक रेडिएशन बच्चे को किस हद तक हानि पहुंचा सकता है। इजरायल की हादषा मेडिकल कॉलेज की प्रोफेसर डॉ देवराज डेविस लंबे समय से मोबाइल फोन रेडिएशन के खतरे पर रिसर्च कर रही हैं। डॉक्टर डेविस का कहना है कि मोबाइल फोन रेडिएशन से न केवल कैंसर का खतरा बढ़ता है बल्कि पुरुषों में स्पर्म काउंट भी कम हो जाता है। इसके अलावा गर्भावस्था से गुजर रही महिलाओं के लिए भी यह रेडिएशन अच्छा नहीं है। इससे जन्म के वक्त बच्चों के दिमाग का आकार छोटा रह जाता है। डेवरा डेविस ने मेलबर्न यूनिवर्सिटी के एक कार्यक्रम में स्पीच दी थी जो हैरान करने वाली थी। उन्होंने बताया कि। एक व्यस्क और एक 3 वर्ष की बच्ची का मोबाइल फोन पर बात करते हुए MRI कराया । इसके अंतर्गत व्यक्ति का चेहरा लाल और पीला हो चुका था। 3 वर्ष की बच्ची का MRI तो और भी हैरान करने वाला था। उस बच्ची का चेहरा फोन कॉल बाद पीले और लाल रंग का रेडिएशन बच्ची के दोनों आंखों तक पहुंच चुका था। उनका कहना था कि इससे किसी की मौत नहीं होती और शायद ना कोई बायोलॉजिकल फर्क भी पड़ेगा। लेकिन सवाल यह है कि लगातार इस तरह के एक्सपोजर का क्या असर होगा ? समस्या यह है कि हमारे पास ऐसे लोग मौजूद ही नहीं हैं जिनके साथ रेडिएशन के प्रभाव की तुलना की जा सके। जब दवाओं पर कोई अध्ययन की जाती है तो कुछ लोगों को दवा दी जाती है और कुछ को नहीं इसी आधार पर दवा के असर की जांच की जाती है। इस प्रकार हमारे पास कोई कंट्रोल ग्रुप ही नहीं होता । यहां तक की सभी उम्र के आधे से अधिक बच्चे मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं।

शोध प्रविधिः प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में झारखण्ड के हजारीबाग जिले को चूना गया। हजारीबाग छात्र–छात्राओं का हब है बहुत से युवक/युवतियाँ ग्रामीण परिसर से आकर हजारीबाग में रहते है। यहॉ कई कोचिंग संस्थान, विद्यालय, महाविद्यालय व प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। इस प्रकार बहुत से युवक–युवतियाँ ग्रामिण परिसर से आकर हजारीबाग में रहते हैं।

प्रस्तुत शोध में वर्णात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है। स्वनिर्मित प्रश्नावली को उपकरण के रूप में विकसित किया गया। व्यक्तिगत प्रपत्र के द्वारा आधारभूत सूचना एकत्रित की गयी। विशेष सूचना प्रश्नावली द्वारा एकत्रित की गयी। प्रदत संकलन हेतु झारखण्ड के हजारीबाग जिले को चुना गया। इस प्रकार हजारीबाग जिले के 500 किशोर व किशोरियाँ प्रदत के अन्तर्गत हैं। ऑकड़ो को वास्तविकता के अधार पर परखने का प्रयास किया गया। ऑकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु वर्णात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

परिणाम एवं तथ्यो का विश्लेषण

तालिका 1: आयु के आधार पर मोबाइल फोन का अनुप्रयोग

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
15-20 वर्ष	20	40%	14	28%
21-25 वर्ष	22	44%	24	48%
25-30 वर्ष	08	16%	22	44%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

आयु के आधार पर मोबाइल फोन का अनुप्रयोग कर अनुसूची के माध्यम से सर्वेक्षण किया गया तथा पाया गया कि 21–25 वर्ष के युवाओं एवं युवतियों में माबाइल फोन अनुप्रयोग की लत सबसे अधिक है। जबकि 25–30 वर्ष की महिलाओं में इसकी लत कम है। इसी प्रकार 15–20 वर्ष के युवाओ में इसकी लत कम है।इसका कारण यह है कि युवा उच्चमसध्यमिक विद्यालय में पढ़ रहे है और विद्यालय में मोबरइल फोन नही ले जासकते इस लिए प्रयोग कम करते है। इस प्रकार 25–30 वर्ष की महिलाओं कि इस अवस्था में रोजगार से सम्बधित अथवा सादी के बाद बच्चे हो जाने पर पारीवारीक कार्यो में वयस्त होजाते है।जिसके कारण मोबाइल फोन का प्रयोग कम कर पातेहै।

तालिका 2: शिक्षा के अनुसार मोबाइल फोन का अनुप्रयोग

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
मैट्रीक	2	4%	8	16%
इंअरमीडिएट	12	24%	16	32%
स्नातक	24	48%	12	24%
स्नातकोतर	12	24%	14	28%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

शिक्षा के आधार पर मोबाइल फोन का अनुप्रयोग कर अनुसूची के माध्यम से सर्वेक्षण केया गया तथा पाया गया कि स्नातक के युवतियॉ मोबाइल फोन का अनुप्रयोग सबसे अधिक करती है इसी प्रकार इंटरमीडिएट के युवाओं द्वारा भी अधिक प्रयोग किया जाता है। जबकि सबसे निम्न स्तर पर मैट्रिक के युवक एवं युवतियों द्वारा प्रयोग किया जाता है। इस कारण है कि माध्यमिक स्तर पर पढ़ायी से संबंधित तनाव मे रहते है। कम उम्र होने के कारण अभिभावक भी मोबाइल प्रयोग कम करने पर जोर देते है।

तालिका 3: खुले एप्लिकेशन को पुनः खोलने का प्रयास का विशलेषण

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
हॉ	26	52%	30	60%
नही	24	48%	20	40%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

खुले एप्लिकेशन को पुनः खोलने का प्रयास करने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 15–30 वर्ष के आयु समुह में से 52 युवतियाँ एवं 60 युवक खुले एप्लिोषन के पुनः खोलने का प्रयास करते है।

तालिका 4: स्मार्ट फोन को 24/7 अपने पास रखने की स्थिति

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
हॉ	44	88%	42	84%
नही	06	12%	08	16%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

स्मार्टफोन को 24/7 अपने पास रखने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि लड़कियाँ/युवतियाँ युवकों की अपेक्षा 24 घंटे मोबाइल फोन अपने पास रखती है जिसके पारिवारिक संबंध पर भी असर आया है।

तालिका 5: स्मार्ट फोन का उपयोग कर शांत और सहज अनुभव करने की स्थिति

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
हॉ	48	96%	44	88%
नही	02	4%	08	16%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

स्मार्टफोन का उपयोग कर शांत ओर सहज अनुभव करने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि युवतियाँ एवं युवक दोनो के द्वारा ही स्मार्ट फोन का उपयोग करनेकी स्थिति में सहज एवं शांत अनुभव कर पाते है।

तालिका 6: टी0 वी0 और खाना हुए भी फोन के प्रयोग की स्थिति

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
हॉ	32	64%	38	88%
नही	18	36%	12	16%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

टी0 वी0 और खाना खाते वक्त फोन के अनुप्रयोग की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि युवाओं द्वारा खाना खाते वक्त सबसे अधिक मोबाइल फोन अनुप्रयोग किये जाते है।

तालिका 7: मीटिंग एवं परीक्षा में फोन के उपयोग की स्थिति।

लड़कियो की संख्या प्रतिशत लड़को की संख्या प्रतिषत				
हॉ	40	80%	28	56
नही	10	20%	22	44%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

महत्वपुर्ण मींटिग और परीक्षा में फोन के उपयोग के स्थिति का सर्वे किया गया है। इसके अन्तर्गत 80% लड़कियाँ एवं 56% लड़को ने यह माना है कि उन्होने महत्वपुर्ण मींटिग और परीक्षा में अनपे फोन का प्रयोग किया है एवं वही 20% लड़कियाँ एवं 44% लड़को ने इससे इनकार किया है।

तालिका 8: फोन के उपयोग के दौरान समय का पता नही चलने की स्थिति

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
हॉ	40	80%	36	72%
नही	10	20%	12	28%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

फोन के उपयोग के दौरान समय का पता नही चलने की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवाओ के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत 80% लड़कियाँ एवं 72% लड़को ने यह माना है कि उन्हे अपने मोबाइल फोन के उपयोग के दौरान समय का पता नही चलतं है। ठीक इसके विपरीत 20% लड़कियाँ एवं 28% लड़को ने इससे इन्कार किया है।

तालिका 9: ई–मेल संदेशो और मिस्कॉल को जुनुनी रूप से जाँच करने कि स्थिति

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
हॉ	38	76%	30	60%
नही	12	24%	20	40%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

ई–मेल संदेशो और मिस्डकॉल को जुननी रूप से जाँच करने की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवाओ के बीच किया गया है। जिसमें 76% लड़कियाँ एवं 60% लड़को ने यह माना है कि वे अपने ई–मेल संदेशो और मिस्डकॉल को जुनुनी तौर पर जाँच करते है। ठीक इसके विपीत 24% लड़कियाँ एवं 40% लड़को ने इससे इन्कार किया है।

तालिका 10: प्रत्येक 10 मिनट में मोबाइल जाँच की स्थिति

	लड़कियों की सं0	प्रतिशत	लड़कियों की सं0	प्रतिशत
हॉ	24	48%	32	64%
नही	26	52%	18	36%
लड़के एवं लड़कियो की कुल संख्या	50	100%	50	100%

प्रत्येक 10 मिनट में मोबाइल जाँच की स्थिति का सर्वे 15से 30 वर्ष के युवाओं के बिच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 48% लड़कियाँ एवं 64% लड़को ने अपनी हॉ में सहमती जताती है। इसके विपीत 52% लड़कियाँ एवं 36% लड़को ने इससे इन्कार किया है। इस विषलेषण में लड़को की हाँ की प्रतिषता अधिकता है।

फोन की बैटरी को हर दिन चार्ज करने की स्थिति का अध्ययन 15–30 वर्ष के युवाओ का सर्वे किया गया है। इसके अन्तर्गत 100% लड़कियाँ एवं 76% लड़को ने यह माना है कि वे प्रत्येक दिन अपने मोबाइल को चार्ज करते है। इससे इन्कार करने वाले लड़को की प्रतिषत 24 है एवं लड़कियो की षुन्य है।

तालिका 11: फोन की बैटरी को हर दिन चार्ज करने की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत लड़को की संख्या प्रतिशत				
हॉ	50	100%	36	76%
नही	0	0%	12	24%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

तालिका 11: फोन को अलग कमरे में भुल जाने पर उसे तुरंत प्राप्त करने की स्थिति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	48	96%	32	64%
नही	02	4%	18	36%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

फोन को अलग कमरे में भुल जाने पर उसे तुरंत प्राप्त करने की स्थिति का सर्वेक्षण 15–30 वर्ष के युवाओं का सर्वे किया गया है। इसके अन्तर्गत 96% लड़कियाँ एवं 64% लड़को ने माना है कि वे फोन को अलग कमरे मे भुल जाने पर उसे तुरंत प्राप्त करते है। इसके विपरीत 4% लड़कियाँ एवं 36% लड़को ने नही मे अपना मत दर्षाया है।

तालिका 13: फोन को गिरा देने या गुम हो जाने की स्थिति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	50	100%	38	76%
नही	0	0%	12	24%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

फोन को गिरा देने या गुम हो जाने की डर की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवाओ के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत यह ज्ञात हुआ है कि 100% लड़कियाँ एवं 76% लड़को ने अपनी सवीकृति जतायी है। इसके इन्कार करने वाले लड़को का मत 24 है एवं लडकियों का 0 है।

तालिका 14: सोते वक्त भी फोन को पास रखने की स्थिति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	40	80%	48	96%
नही	10	20%	02	4%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

सोते वक्त भी फोन को पास रखने की स्थितति का 15–30 वर्ष के युवाओ के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत 80% लड़कियाँ एवं 96% लड़को ने अपनी हॉ में अपनी सहमती दी है। वही 20% लड़कियाँ एवं 04% लड़को ने नही में अपना मत दर्षाया है।

तालिका 15: फोन को बाथरूम में अपने साथ ले जाने कि थिति।

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	26	52%	32	64%
नही	24	48%	18	36%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

फोन को बाथरूम में अपने साथ ले जाने कि स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवाओ के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत 52% लड़कियाँ एवं 64% लड़को ने अपनी यह स्वीकृती जताई है कि वे अपने मोबाइल फोन को बाथरूम में लेकर जाते है। ठीक इसके विपरीत 48% लड़कियाँ एवं 36% लड़को ने अपनी अहसमती जतायी है।

तालिका 16: बेवजह फोन में बाइब्रेषन महषुष करने की स्थिति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	41	84%	36	72%
नही	10	16%	14	28%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

बेवजह फोन में वाइब्रषन महशुश करने की स्थिति का विशलेषण 15–30 वर्ष के युवाओ के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत 82% लड़कियाँ एवं 72% लड़को ने अपने फोन में बेवजह वाइब्रषन महषुष किया है। जब कि 18% लड़कियाँ एवं 28% लड़को ने ऐसा महषुष करने से इन्कार किया है।

तालिका 17: फोन मे लगातार संदेष के आदान–प्रदान से आसपास के परिवेश पर ध्यान नही दे पाने की स्थिति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	30	60%	32	64%
नही	20	40%	18	28%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

फोन मे लगातार संदेश के आदान–प्रदान से आसपास के परिवेष पर ध्यान नही दे पाने की स्थिति का विश्लेषण 15–30 वर्ष के युवा के बीच किया गया है। जिसमें 60% लड़कियाँ एवं 64: लड़को ने इसे स्वीकार किया है कि वे अपने फोन में इस हद तक खो जातें है कि वे अपने आस–पास के माहौल पर ध्यान नही दे पाते है कि उनके आस–पास क्या हो रहा है। वही 40% लड़कियॉ एवं 36% लड़को ने इसे इन्कार किया है।

तालिका 18: अवसाद की स्थिति में फोन अनुप्रयोग करने की स्थिति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	41	82%	41	82%
नही	09	18%	09	18%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

चिंतित, दुःखी एवं अकेला महसुस करने पर फोन चालु करने की स्थिति का 15–30 वर्ष के युवा के बीच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 82% लड़कियाँ एवं लड़को ने अपनी सहमती जताई है एवं 18% लड़कियाँ एवं लड़को ने अपना जवाब नही में देकर असहमती दर्शाया है।

सोशल मीडिया पर आप–टु डेट रहने की स्थिति 15–30 वर्ष के युवा के बीच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 60% लड़कियाँ एवं 64% लड़को ने यह स्वीकार किया है कि उन्हे सोशल मीडिया पर आप–टु डेट रहना पसंद है। ठीक इसके विपरीत 40% लड़कियाँ एवं 36% लड़को ने इससे इन्कार किया है।

तालिका 19: सोशल मीडिया पर आप–टु डेट रहने की स्थिति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	30	60%	32	64%
नही	20	40%	18	36%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

तालिका 20: डेटा खत्म होने पर वाई–फाई कनेकषन के लिए परेषान होने की सिथति

लड़कियो की संख्या	प्रतिशत	लड़को की संख्या	प्रतिशत
हॉ	22	44%	40	80%
नही	28	56%	10	20%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

डेटा खत्म होने पर वाई–फाई कनेकशन के लिए परेशान होने की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 44% लड़कियाँ एवं 80% लड़को ने यह माना है कि उनके मोबाइल पर डेटा खत्म होने पर वे वाई–फाई से कनेकट होने लिए परेशान होने लगते है। ठीक इसके विपरीत 56% लड़कियाँ एवं 20% लड़को ने इससे इन्कार किया है।

तालिका 21: स्मार्टफोन का अधिकतम इस्तेमाल करने के क्षेत्र की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
सेल्फी	22	44%	12	24%
बात करने में	08	16%	14	28%
सोषल साइट पर	12	24%	14	28%
षैक्षणिक कार्यो में	08	16%	10	20%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

स्मार्टफोन का अधिकतम इस्तेमाल करने के क्षेत्र की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवाओ के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत स्मार्टफोन का अधिकतम इस्तेमाल करने के क्षेत्र की स्थिति का पता लगाया गया है। जिसमे सेल्फी लेने में लड़कियों की प्रतिशता 44% एवं लड़को की 24% है। जबकी बात करने एवं शैक्षिक कार्यो में लड़कियो कि प्रतिशत सबसे कम है। सोशल साइट पर अधिक सक्रिय है। लड़के सेलफी लेने, बात करने, एवं सोशल साइट पर अधिक सक्रिय है शैक्षिक कार्यो में प्रतिशत्ता कम है।

तालिका 22: अनुपयुकत साइट खोलने की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
हॉ	22	44%	40	80%
नही	28	56%	10	20%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

अनुपयुकत साइट खोलने की स्थिति का विशलेशण 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 56% लड़कियो ने इससे अपनी अहसमती जतायी है। जबकि 80% लड़को ने अपनी सहमती जतायी है।

तालिका 23: एसी जगह जाने की स्थिति जहाँ फोन ले जाने की अनुमती नही है।

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
हॉ	42	84%	28	56%
नही	08	16%	22	44%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

एसी जगह जाने की स्थिति जहाँ फोन ले जाने की अनुमती नही है का सर्वे 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 84% लड़कियाँ एवं 56% लड़को ने हॉ में अपनी सहमती जताई है।

तालिका 24: माता–पिता द्वारा फोन पर कम समय बिताने की सलाह मानने की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
हॉ	22	44%	34	32%
नही	28	56%	16	68%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

माता–पिता द्वारा फोन पर कम समय बिताने की सलाह दिए जाने पर उसे मानने की स्थिति का विषलेषण 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 56% लड़कियाँ एवं 68: लड़को ने यह माना है कि वह अपने माता–पिता की बात नही मानते है।

रात को बीच मे उठने पर अपने फोन को चेक करने की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। जिसके अन्तर्गत 44% लड़कियाँ एवं 68% लड़को ने अपनी हॉ में सहमती जतायी है एवं 56% लड़कियाँ एवं 32% लड़को ने इससे इन्कार किया है।

तालिका 25: रात को बीच मे उठने पर अपने फोन को चेक करने की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
हॉ	22	44%	34	68%
नही	28	56%	16	32%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

तालिका 26: फोन की बैटरी खत्म होने से पहले उसे चार्ज करने की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
हॉ	40	80%	34	68%
नही	10	20%	16	32%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

फोन की बैटरी खत्म होने से पहले उसे चार्ज करने की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत 80% लड़कियाँ एवं 68% लड़को ने इसमे अपनीं सहमती जतायी है 20% लड़कियाँ एवं 32% लड़के इससे असहमत है।

चार्जिंग प्वाइन्ट में भी अपने फोन का उपयोग करने की स्थिति का सर्वे 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत 64% लड़कियाँ एवं 80% लड़को ने यह माना है कि उन्होने चार्जिंग पाइंट पर भी अपने फोन का इस्तेमाल किया है। इसके विपरीत 36% लड़कियाँ एवं 20% लड़को ने इसमे अपनी असहमती जताई है।

तालिका 27: चार्जिंग प्वाइन्ट में भी अपने फोन का उपयोग करने की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
हॉ	32	64%	40	80%
नही	18	36%	10	20%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

तालिका 28: मेबाइल फोन के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके होने की स्थिति

लड़कियो की संख्या प्रतिशत		लड़को की संख्या प्रतिशत		
हॉ	48	96%	40	80%
नही	02	04%	10	20%
लड़कियो एवं लड़को की संख्या	50	100%	50	100%

मेबाइल फोन के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके होने की स्थिति का सर्वेक्षण 15–30 वर्ष के युवा वर्ग के बीच किया गया है। इसके अन्तर्गत 96% लड़कियाँ एवं 80% लड़को ने यह माना है कि उनका स्मार्ट फोन उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। वही 4% लड़कियाँ एवं 20% लड़को ने इससे इन्कार किया है।

निष्कर्ष

तथ्यो के विशलेशण के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गये

- आयु के आधार पर देखा गया है कि 21–25 वर्ष के लोगो में मोबाइल फोन की लत अधिक है।
- शिक्षा के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है कि इंटरमीडियट और स्नातक के छात्रो द्वारा मोबाइल फोन का उपयोग अधिक किया जाता है।
- खुले एप्लिकेशन को पुनः खोलने का प्रयास करने की स्थिति का सर्वेक्षण कर पाया गया कि 15–30 वर्ष लोगो में इसका प्रवुति अधिक होती है।
- स्मार्टफोन को 24/7 रखने की स्थिति का सर्वेक्षण कर पाया गया कि युवतियाँ युवाको की अपेक्षा 24 घंटे मोबाइल अपन

पास रखना पसन्द करती है जिसका असर उनके पारिवारिक सम्बन्ध पर भी पड़ता है।

- टी0वी0 और खाना खाते वक्त फोन के अनुप्रयोग की स्थिति का सर्वे किया गया और पया गया कि खाना खाते वक्त सबसे अधिक मोबाइल फोन का अनुप्रयोग किये जाते है
- महत्वपूर्ण मीटिंग और परीक्षा में फोन के उपयोग की स्थिति का सर्वे कर पाया गया कि 80% से अधिक लोग इसका प्रयोग करते है।
- फोन के उपयोग के दौरान समय का पता नही चलने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 80% लड़कियाँ और 72% लडको ने यह माना है। कि मोबाइल फोन के उपयोग के दौरान समय का पता नहीं चल पाता है। जबकि 20% लड़कियाँ और 28% लड़के इससे इन्कार करते है।
- ई–मेल संदेशो और मिस्डकॉल को जुनूनी रूप से जाँच करने की स्थिति का सर्वे किया गया तो पाया गया कि 15–30 वर्ष के 76% लड़कियाँ और 60% लड़के जुनूनी तौर पर जाँच करते है। इस प्रकार लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा मोबाइल फोन के प्रति अधिक जुड़ी हुई है।
- प्रत्येक दस मिनट में मोबाइल जाँच की स्थिति का सर्वे किया गया तो पाया गया तो लड़को लड़कियों की अपेक्षा अधिक द्रुत गति से एवं कम समय अन्तरांल पर मोबाइल को जाँचते रहते है।
- फोन की बैटरी को हर दिन चार्ज करने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि लड़के लड़कियाँ की अपेक्षा प्रत्येक दिन बैटरी को चार्ज करते है।
- फोन को अलग कमरे में भुल जाने पर उसे तुरंत प्राप्त करने कि स्थिति का सर्वे कर पाया गया कि 96% लड़कियाँ और 64% लड़के तुरंत फोन को प्राप्त करने की कोषिष करते है।
- फोन गुम हो जाने या गिरा देने के डर की स्थिरति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 100% लड़कियाँ एवं 76% लड़को में मोबाइल गुम होने का डर रहता है।
- सेते वक्त भी फोन को पास रखने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 96% लड़को एवं 80% लड़कियो में फोन को पास में रखने की आदत है।
- फोन को बाथरूम में भी अपने साथ ले जाने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 15–30 वर्ष के युवाओं में 52% लड़कियाँ एवं 64% लड़को ने मोबाइल फोन को बाथरूम में लेकर जाते है।
- बेवजह फोन में बाइब्रषन महशुश करने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा तथा पाया गया कि 52% लड़कियाँ एवं 64% लड़के फोन में ब्राइवेशन महसुस करते है जबकि अन्य एवं 64% लड़के ने इससे इन्कार किया।
- फोन में लगातार संदेष के आदान–प्रदान से आसपास के परिवेश पर ध्यान नहीं दे पाने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 60% लड़कियाँ एवं 60% लड़के आपने फोन में इस हद तक खो जाते है कि उन्हें अपने आस–पास के परिवेश का ज्ञात नही होता।
- अवसाद की स्थिति में फोन अनुप्रयोग का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 82% लड़के व लड़कियाँ अवसाद की स्थिति में फोन अनुप्रयोग में व्यस्त रहते है।
- सोशल मीडिया पर अप–टु–डेट रहने की स्थिाति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 60% लड़कियाँ व 64% लड़के पर अप–टु–डेट रहते है।
- डेटा खत्म होने की स्थिति में वाई–फाई कनेक्शन के लिए परेशान होने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 44% लड़कियाँ व 80% लड़को डेटा खत्म हाने की स्थिति में वाई–फाई से कनेक्शन के लिए परेशान हो जाते है।
- स्मार्टफोन का अधिकतम इस्तेमाल करने के क्षेत्र की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया लड़को की अपेक्षा लड़कियाँ अधिक सेल्फी लेने में प्रयोग करती है।
- अनुपयुक्त साइट खोलने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि लड़को की अपेक्षा लड़कियाँ की अपेक्षा लड़के अनुपयुक्त साइट खालने में रूचिप्रद रहते है।
- माता–पिता द्वारा फाने पर कम समय बिताने कि सलाह मानने कि स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 56% लड़कियाँ एंव 68% लड़को ने माता–पिता कि बात नही मानी।
- रात को बीच में उठने पर अपने फोन को चेक करने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि लड़के लड़कियाँ की अपेक्षा रात में कभी–भ्झी उठ कर फोन का अनुप्रयोग करते है।
- फोन की बैटरी खत्म होने से पहले उसे चार्ज करने की स्थिति का सर्वे सर्वे किया गया तथा पाया गया कि लड़कियाँ लड़के कर अपेक्षा अधिक तत्पर रहते है।
- चार्जिंग प्वाइंट में भी अपने फोन का उपयोग करने की स्थिति का सर्वे किया तथा पाया गया कि 80% लड़के एंव 64% लड़कियाँ प्रयोग करते है।
- मोबाइल फोन को जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके होने की स्थिति का सर्वे किया गया तथा पाया गया कि 96% लड़कियाँ एंव 80% लड़को ने मोबइल फोन को अभिन्न हिस्सा माना है।

संदर्भ

1. जी न्युज . इंडिया .कॉम, 4 मई 2016
2. WWW. गजबहिन्दी.कॉम, 9 जुन 2016
3. टीचसेवी. कॉम